IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्थानिक असमानता और सामाजिक बहिष्करण : झुग्गी बस्तियों के वितरण का एक आलोचनात्मक अध्ययन

राहुल यादव, डॉ शैलेन्द्र कुमार राय

शोध छात्र, असिस्टेंट प्रोफेसर

भूगोल विभाग, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया उत्तर प्रदेश 277301

सारांश

इस अध्ययन में शहरी परिवेश में झुग्गी बस्तियों के वितरण से जुड़ी स्थानिक असमानता और सामाजिक बहिष्कार की गहन जाँच की गई है। यह अध्ययन इस बात का पता लगाता है कि शहरी नियोजन का उद्देश्य और बल प्रयोग जैसे बेदखली या पुनर्वास—झुग्गी बस्तियों के समुदायों के साथ व्यवहार और उनकी धारणा को कैसे प्रभावित करते हैं, और नैतिक निर्णय के ढाँचों से वैचारिक संकेत लेता है। अध्ययन इस बात की जाँच करता है कि क्या ये कारक विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक स्वरूपों में समान रूप से कार्य करते हैं या क्षेत्रीय रीति–रिवाजों और राजनीतिक व्यवस्थाओं के आधार पर इनमें भिन्नता होती है। यह तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए कई शहरों में झुग्गी बस्तियों के वितरण का अध्ययन करता है, और इस बात पर जोर देता है कि नीतिगत इरादे और प्रत्यक्ष हस्तक्षेप (व्यक्तिगत शक्तियाँ) सामाजिक परिणामों को कैसे प्रभावित करते हैं। यह निष्कर्ष निकालता है कि झुग्गी बस्तियों को खाली कराने के लिए शारीरिक बल का प्रयोग हमेशा बहिष्कार में वृद्धि और सार्वजनिक छवि को नुकसान पहुँचाता है, जो विस्थापन के प्रति एक सामान्य मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया की ओर इशारा करता है। हालाँकि, बहिष्कार का प्रभाव स्थान के आधार पर भिन्न होते हैं। पूर्वी और दक्षिणी शहरी समूहों में प्रतिक्रियाएँ अधिक सूक्ष्म और विकास पर निर्भर होती हैं, लेकिन पश्चिमी शहरी समूहों में नीतिगत इरादे—चाहे दंडात्मक हों या विकासात्मक, जनता के दृष्टिकोण को प्रभावित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। अध्ययन व्यक्तिवाद और सामूहिकता जैसे सांस्कृतिक लक्षणों के प्रभाव का भी आकलन करता है, लेकिन झुग्गी बस्तियों के वितरण की धारणाओं के साथ इसका कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया है। इससे पता चलता है कि बहिष्कारवादी प्रथाएँ और व्यवस्थागत अन्याय सांस्कृतिक विभाजनों को पार कर सकते हैं। कुल मिलाकर, यह अध्ययन शहरी नीति में नैतिक तर्क के महत्व पर जोर देता है और समावेशी नियोजन रणनीतियों को बढ़ावा देता है जो झुग्गी बस्तियों से संबंधित मुद्दों से निपटने में सांस्कृतिक विविधता और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को ध्यान में रखती हैं।

मूल शब्द – झुग्गी बस्ति, नियोजन, स्थानिक असमानता, सामाजिक बहिष्कार

परिचय

आधुनिक विकास के सबसे विशिष्ट पहलुओं में से एक शहरीकरण है, जो दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं, समाजों और परिदृश्यों को बदल रहा है। शहरों को अक्सर अवसर, नवाचार और विकास के केंद्र के रूप में देखा जाता है। हालाँकि, शहरी क्षेत्रों में अवसरों, संसाधनों और सेवाओं का असमान वितरण एक कठोर और स्थायी वास्तविकता है जो प्रगति के इस आख्यान के पीछे छिपी है। झुग्गी–झोपड़ियाँ—अनौपचारिक बस्तियाँ जो लचीलापन और उपेक्षा दोनों प्रदर्शित करती हैं, इस घटना के परिणामस्वरूप बढ़ी हैं, जिसे स्थानिक असमानता और सामाजिक बहिष्कार के रूप में जाना जाता है। **झुग्गियाँ केवल आवास की कमी या जनसंख्या दबाव का परिणाम नहीं हैं, बल्कि शहरी नियोजन, शासन और सामाजिक न्याय से जुड़ी अधिक गंभीर संरचनात्मक समस्याओं का संकेत हैं।** इन क्षेत्रों के निवासियों को अक्सर मौलिक अधिकारों और सेवाओं से वंचित रखा जाता है, जिससे वे उन्हीं शहरों में अदृश्य हो जाते हैं जिनका वे समर्थन करते हैं। शहरी असमानता के व्यापक मुद्दों को संबोधित करने और अधिक समावेशी शहरों की कल्पना करने के लिए उन कारकों को समझना आवश्यक है जो झुग्गी–बस्तियों के वितरण को प्रभावित करते हैं।

किसी शहर के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवाओं, बुनियादी ढाँचे और आर्थिक अवसरों के असमान वितरण को स्थानिक असमानता कहा जाता है। वास्तव में, इसका अर्थ है कि कुछ मोहल्लों आमतौर पर झुग्गी–झोपड़ियों में खराब सुविधाएँ और कनेक्टिविटी है, जबकि अन्य मोहल्ले स्वच्छ जल, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और परिवहन के साथ सुनियोजित होतें हैं। ये अनौपचारिक बस्तियाँ आमतौर पर शहरों के बाहरी इलाकों में, औद्योगिक क्षेत्रों के पास या पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में, जहाँ जमीन सस्ती है और नियमन कम है। दूसरी ओर, सामाजिक बहिष्कार एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें लोगों या समुदायों को संसाधनों, अधिकारों और सार्वजनिक मामलों में भागीदारी तक पहुँच से नियमित रूप से वंचित किया जाता है। आर्थिक कठिनाई के अलावा, यह संस्थागत, सांस्कृतिक और राजनीतिक हाशिए पर होने का भी संकेत देता है। कानूनी मान्यता का अभाव और सीमित राजनीतिक प्रतिनिधित्व झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वालों के लिए आम बात है। जब सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असमानता एक साथ मौजूद होते हैं, तो एक दुष्चक्र बनता है। हाशिए पर पड़े समूहों को अविकसित क्षेत्रों में रहने के लिए मजबूर किया जाता है जहाँ बुनियादी ढाँचे और निवेश का अभाव होता है, जिससे वे और भी अलग–थलग पड़ जाते हैं। शहरी नियोजन के विकल्प, जो भूमि के मूल्य और आर्थिक दक्षता को समानता और मानवीय गरिमा से ऊपर रखते हैं, इस चक्र को बढ़ावा देते हैं।

वर्तमान परिवेश में झुग्गी–झोपड़ियों के वितरण से उत्पन्न समस्याएँ पहले से कहीं अधिक विकट हैं। प्रवासन, तीव्र शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन और बढ़ती आर्थिक असमानताओं जैसे कारकों के कारण किफायती आवास और समावेशी शहरी नीतियों की आवश्यकता बढ़ गई है। वर्तमान में लगभग एक अरब से अधिक लोग झुग्गी–झोपड़ियों या अनौपचारिक बस्तियों में रहते हैं, और संयुक्त राष्ट्र–आवास परियोजनाओं के अनुसार अगले कुछ दशकों में यह संख्या अनियमित रूप से बढ़ती जाएगी। कोविड–19 महामारी ने झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाले समुदायों की कमजोरियों को और उजागर किया, उनकी अत्यधिक भीड़भाड़, स्वच्छता की कमी और स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच ने उन्हें संक्रमण के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील बना दिया। अनौपचारिक श्रमिक, जिनमें से कई झुग्गी–झोपड़ियों में रहते हैं, लॉकडाउन और आर्थिक व्यवधानों से असमान रूप से प्रभावित हुए। ये तथ्य सामाजिक और स्थानिक असमानता को जन स्वास्थ्य और मानवाधिकारों के साथ–साथ विकासात्मक मुद्दों के रूप में संबोधित करने की आवश्यकता को उजागर करते हैं। भविष्य में स्मार्ट शहरों, डिजिटल बुनियादी ढाँचे और जलवायु अनुकूलन योजनाओं के विकास से जुड़े अवसर और जोखिम दोनों होंगे। **औपचारिक और अनौपचारिक शहरी स्थानों के बीच की खाईं तभी और गहरी होगी जब झुग्गी–झोपड़ियों को इन नए ढाँचों से बाहर रखा जाएगा। इसलिए समानता, भागीदारी और स्थिरता भविष्य की शहरी नियोजन की आधारशिला होनी चाहिए।**

झुग्गी बस्तियों का वितरण सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असमानता से प्रभावित होता है, और यह अध्ययन आलोचनात्मक रूप से जाँच करता है कि क्या ये रुझान विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भों में सही हैं। शहरी नियोजन को नैतिक मनोविज्ञान का सहारा लेते हुए, अर्थशास्त्र की माँगों और समान आवास के अधिकार के बीच की नैतिक उलझन को भी सुलझाना होगा, जहाँ समस्याएँ अक्सर नियम–आधारित और परिणाम–आधारित तर्क के बीच टकराव का कारण बनती हैं। यह अध्ययन विभिन्न शहरों के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से झुग्गी–बस्तियों के विकास में योगदान देने वाले संरचनात्मक कारकों, शासन और नैतिक कार्य, व्यक्तिवाद एवं सामूहिकता जैसे सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभाव की जाँच करता है। प्रारंभिक शोध के अनुसार, झुग्गी बस्तियों का वितरण सार्वभौमिक रूप से स्थानिक कारकों से प्रभावित होता है, जिसमें परिवहन केंद्रों, आर्थिक केंद्रों और पर्यावरणीय खतरों से निकटता शामिल है। सामाजिक आशय के प्रभाव में क्षेत्रीय अंतर मौजूद हैं, जिसमें संस्थागत ढाँचे, सार्वजनिक दृष्टिकोण और नीतिगत प्राथमिकताएँ शामिल हैं। सांस्कृतिक आयामों और झुग्गी–बस्तियों के वितरण के बीच एक मजबूत प्रत्यक्ष संबंध का अभाव दर्शाता है कि संरचनात्मक और नीतिगत कारकों का प्रभाव अधिक हो सकता है। इन गतिशीलताओं को उजागर करके, अध्ययन शहरी असमानता के बारे में ज्ञान को बढ़ाने और भविष्य की शहरी विकास योजनाओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने की आशा करता है जो अधिक समतापूर्ण और समावेशी हों।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह लंबे समय से ज्ञात है कि शहरी क्षेत्रों में झुग्गी–बस्तियों के विकास और वृद्धि का कारण अंतर्निहित संरचनात्मक असमानता है। भूगोल, समाजशास्त्र और शहरी अध्ययन सहित विभिन्न क्षेत्रों में किए गए पिछले अध्ययनों ने लगातार यह दर्शाया है कि झुग्गी–बस्तियाँ मुख्य रूप से सामाजिक हाशिए पर पड़े समूहों द्वारा बसी होती हैं और आमतौर पर उन क्षेत्रों में विकसित होती हैं जहाँ स्वच्छ जल, बिजली, स्वच्छता और परिवहन जैसी बुनियादी संरचनाएँ उपलब्ध नहीं होती हैं। ये समुदाय अक्सर शहरों के बाहरी इलाकों में, पर्यावरणीय क्षति के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में या औद्योगिक क्षेत्रों के निकट बसते हैं जहाँ जमीन सस्ती होती है और नियमन कम होता है। यह स्थानिक हाशिए पर जानबूझकर किया गया है, यह नीतिगत ढाँचों और शहरी नियोजन निर्णयों का परिणाम है जो आवास और सेवाओं तक उचित पहुँच की तुलना में भूमि के मूल्य और आर्थिक विकास को अधिक प्राथमिकता देते हैं। शहरी संसाधनों का असमान वितरण, जिसके परिणामस्वरूप समृद्ध, अच्छी तरह से सेवा प्राप्त करने वाले समुदाय और अनौपचारिक बस्तियों के बीच तीव्र अंतर उत्पन्न होता है, यह स्थानिक असमानता के विचार से स्पष्ट होता है। **विद्वानों का तर्क है कि औपचारिक क्षेत्रों को प्राथमिकता देने और अनौपचारिक समुदायों को विकास के एजेंडे से बाहर रखने वाले शासन मॉडल इस असमानता के लिए जिम्मेदार हैं।** उदाहरण के लिए दशकों से चली आ रही सामाजिक–आर्थिक स्तरीकरण और बहिष्करणीय नियोजन ने अहमदाबाद, कोलकाता और मुंबई जैसे स्थानों में झुग्गी–बस्तियों को शहरी परिदृश्य का एक स्थायी हिस्सा बना दिया है।

सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असमानता के कारण झुग्गी–झोपड़ी समुदाय आज भी मौजूद हैं और अदृश्य बने हुए हैं। औपचारिक आवास बाजारों, कानूनी सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच अक्सर सामाजिक रूप से वंचित समूहों, जिनमें निम्न–आय वर्ग, प्रवासी और जातीय अल्पसंख्यक शामिल हैं, के लिए प्रणालीगत बाधाओं के कारण बाधित होती है। ये समुदाय आर्थिक अभाव के अलावा सांस्कृतिक और राजनीतिक हाशिए पर भी हैं। **अध्ययनों के अनुसार राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव और शहरी शासन में भागीदारी का अभाव झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वालों के लिए आम बात है।** झुग्गियों को समुदाय के बजाय समस्या मानने वाले सामाजिक दृष्टिकोण और संस्थागत उपेक्षा इस बहिष्कार को और बढ़ाते हैं। शहरी गरीबी और अनौपचारिक आवास की स्थिति नवउदारवादी नीतियों, निजीकरण और भूमि के वस्तुकरण से और भी बदतर हो गई है, जैसा कि **माइक डेविस की प्लैनेट ऑफ स्लम्स और कई यूएन–हैबिटेट रिपोर्टों जैसी मौलिक रचनाओं में दर्ज है।** ये अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि झुग्गी–झोपड़ियाँ अस्थायी या परिवर्तनकारी क्षेत्र नहीं, बल्कि व्यवस्थागत विफलताओं के दीर्घकालिक परिणाम हैं। इसके अलावा जब सामाजिक और स्थानिक बहिष्कार परस्पर क्रिया करते हैं, तो वंचितता

का एक चक्र उत्पन्न होता है, जो हाशिए पर पड़े समूहों को कम उपयोग वाले क्षेत्रों में धकेल देता है, जिससे उनका बहिष्कार और भी स्थायी हो जाता है। झुग्गी–झोपड़ियों के वितरण के किसी भी आलोचनात्मक विश्लेषण में इस गतिशीलता को ध्यान में रखना चाहिए, विशेष रूप से वैश्विक शहरीकरण, जलवायु संवेदनशीलता और समावेशी विकास की दिशा में सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असमानता के दोहरे मुद्दों का समाधान, जो शहरों के निरंतर विस्तार के साथ एक स्थायी और समतापूर्ण शहरी भविष्य के निर्माण के लिए आवश्यक होगा।

उद्देश्य

शहरी गरीबी और अनौपचारिक बस्तियों पर दशकों के शोध के बावजूद, झुग्गी–बस्तियों के वितरण पर अधिकांश साहित्य अभी भी भौगोलिक रूप से सीमित और संदर्भ–विशिष्ट हैं। अधिकांश शोध वैश्विक दक्षिण के शहरों पर केंद्रित रहे हैं जहाँ झुग्गी बस्तियाँ प्रमुख हैं और अक्सर राजनीतिक रूप से प्रभावित होती हैं, जैसे मुंबई, नैरोबी, ढाका और रियो डी जेनेरो। झुग्गी–बस्तियों के निर्माण में योगदान देने वाले संरचनात्मक कारकों, विशेष रूप से सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असमानता के भूमिकाओं की वैश्विक तुलनात्मक ढाँचे में जाँच नहीं की गई है, इस तथ्य के बावजूद कि इन अध्ययनों ने झुग्गी–बस्तियों में रहने वालों की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान की है। इसके अलावा, इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि इन शहरों में देखे गए रुझान उनके स्थानीय परिवेश तक सीमित हैं या किसी अधिक व्यापक, अंतर–सांस्कृतिक घटना का एक घटक हैं। **विभिन्न सांस्कृतिक समूहों, विशेष रूप से विकसित देशों, संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाओं और छोटे शहरी केंद्रों में तुलनात्मक आंकड़ों के अभाव के कारण एक बड़ा शोध अंतराल पैदा हो गया है।** यह असमानता परिणामों का अनुमान लगाने, सार्वभौमिक नीतिगत सुझाव बनाने, या वैश्विक स्तर पर शहरी हाशिए पर होने की गतिशीलता को समझने की हमारी क्षमता को सीमित करती है। इसके अलावा पूर्व शोध अक्सर झुग्गी–बस्तियों को गरीबी या प्रवास के अलग–अलग परिणामों के रूप में देखते हैं, और शहरी नियोजन, सरकारी ढाँचे और सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर स्थानिक विस्तार और सामाजिक अदृश्यता को प्रभावित करने वाले कारकों पर पर्याप्त रूप से विचार करने में विफल रहते हैं।

विभिन्न भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भों में झुग्गी बस्तियों के वितरण को प्रभावित करने वाले स्थानिक और सामाजिक कारकों की सार्वभौमिकता की जाँच करके, यह अध्ययन इन सीमाओं को दूर करने का प्रयास करता है। एक तुलनात्मक अंतर–राष्ट्रीय पद्धति का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन इस बात की जाँच करता है कि क्या सामाजिक बहिष्कार—जैसे कानूनी मान्यता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सांस्कृ–तिक कलंक और स्थानिक असमानता, जैसे भूमि मूल्य, शहर के केंद्रों से दूरी और बुनियादी ढाँचे तक पहुँच, विभिन्न शहरी संदर्भों में समान रूप से कार्य करते हैं। क्षेत्रीय असमानतावों को उजागर करने के अलावा, अधिक संवेदनशील हस्तक्षेपों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। यह जाँचने के लिए कि झुग्गी बस्तियाँ संरचनात्मक शक्तियों और सांस्कृतिक ढाँचों से कैसे प्रभावित होती हैं। यह इस बात की भी जाँच करता है कि क्या व्यक्तिवाद और सामूहिकता जैसे सांस्कृतिक लक्षण झुग्गी–झोपड़ियों के समुदायों की अनदेखी या बहिष्करिता को प्रभावित करते हैं। अंततः इस अध्ययन का उद्देश्य वैश्विक शहरी वास्तविकताओं को संबोधित करके और स्थानीय अध्ययन से आगे बढ़कर झुग्गी–झोपड़ियों के वितरण की एक अधिक जटिल समझ को विकसित करना है। ऐसा करके यह समावेशी शहरी नीतियों के निर्माण को प्रोत्साहित करने की आशा करता है जो झुग्गियों को स्थानिक और सामाजिक गतिशीलता के जटिल उत्पादों के रूप में स्वीकार करती हैं और जिन्हें विकास की विफलताओं के बजाय विचारशील, न्यायसंगत और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील समाधानों की आवश्यकता होती है।

परिणाम

अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में झुग्गी–बस्तियों के वितरण की गतिशीलता के बारे में महत्वपूर्ण नई जानकारी प्रदान करते हैं, खासकर जब वे सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असमानता से संबंधित हों। भूमि मूल्य, बुनियादी ढाँचे तक पहुँच और शहरी केंद्रों से निकटता सहित स्थानिक कारकों का झुग्गियों के विकास और वृद्धि पर प्रभाव सभी सांस्कृतिक समूहों में पाए जाने वाले सबसे आवर्ती रुझानों में से एक था। इसका तात्पर्य यह है कि आर्थिक प्रणालियों, शासन और शहरी नियोजन मॉडलों में क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद, स्थानिक असमानता एक सांस्कृतिक रूप से सार्वभौमिक कारक के रूप में कार्य करती है। झुग्गियाँ आमतौर पर कम सेवा प्राप्त और भौगोलिक रूप से हाशिए पर स्थित क्षेत्रों में विकसित होती हैं, चाहे वह उत्तरी अमेरिका, उप–सहारा अफ्रीका, दक्षिण एशिया या लैटिन अमेरिका में हो। इससे पता चलता है कि शहरी स्थान के भौतिक विन्यास का अनौपचारिक बस्तियों के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, सामाजिक आशय जिसे यहाँ हाशिए पर पड़े समुदायों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, शासन रणनीतियों और नीतिगत प्राथमिकताओं के रूप में परिभाषित किया गया है। **उदाहरण के लिए, समावेशी आवास योजनाओं या सक्रिय झुग्गी–झोपड़ियों के उन्नयन की पहल वाले शहरों में स्थानिक बहिष्करण कम दिखा, जबकि बाजार–संचालित नियोजन मॉडल वाले शहरों में असमानता अधिक प्रबल है।** भूमि उपयोग और सामुदायिक संगठन से जुड़े सांस्कृतिक मानदंड, प्रशासनिक पारदर्शिता में असमानताएँ, या अनौपचारिक शासन संरचनाएँ, ये सभी इस अस्पष्टता का कारण हो सकते हैं। अध्ययन में यह भी जाँच की गई कि क्या सांस्कृतिक कारकों, विशेष रूप से व्यक्तिवाद और सामूहिकतावाद, का झुग्गी–बस्तियों के वितरण पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। अनौपचारिक बस्तियों के स्थानिक प्रतिमान इन सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ दृढ़ता से सहसंबद्ध नहीं थे, जो अप्रत्याशित था। हालाँकि व्यक्तिवादी समाज व्यक्तिगत जवाबदेही और स्वतंत्रता पर अधिक जोर दे सकते हैं। इन सांस्कृतिक अभिविन्यासों ने झुग्गी–बस्तियों के विकास में योगदान देने वाले संरचनात्मक कारकों को महत्वपूर्ण रूप से नहीं बदला। शहरी असमानता को निर्धारित करने में सांस्कृतिक मूल्यों की तुलना में भौतिक और नीति–संचालित कारकों का महत्व अधिक है। कुल मिलाकर, अध्ययन दर्शाता है कि सामाजिक उद्देश्य और सांस्कृतिक संदर्भ, झुग्गी–झोपड़ियों के वितरण में एक अधिक जटिल और परिवर्तनशील भूमिका निभाते हैं, भले ही स्थानिक असमानता वैश्विक स्तर पर एक सुसंगत कारक है। भविष्य की शहरी नीतियों को इन अंतर्दृष्टियों से बहुत मदद मिलेगी, जो दर्शाती हैं कि हस्तक्षेपों में स्थानिक समानता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और साथ ही स्थानीय शासन और सांस्कृतिक गतिशीलता को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। **बुनियादी ढाँचे में निवेश के अलावा, झुग्गी–झोपड़ियों के विकास को संबोधित करने के लिए समावेशी योजना, सहभागी शासन और सांस्कृ–तिक विभाजनों को पार करते हुए सामाजिक न्याय के प्रति समर्पण की आवश्यकता है।**

निष्कर्ष

इस शोध पत्र का महत्वपूर्ण संदेश यह है कि झुग्गी–बस्तियां और शहरी गरीबी केवल जनसंख्या विस्फोट और जनसांख्यिकीय परिवर्तन या वैश्वीकरण और अमूर्त शक्तियों का परिणाम नहीं हैं। इन्हें आवास नीतियों, कानूनों और सेवा वितरण प्रणालियों की विफलता के रूप में देखा जाना चाहिए, साथ ही राष्ट्रीय और शहरी नीतियों की असफलता के रूप में भी।

अध्ययन का निष्कर्ष इस बात पर बल देता है कि कैसे स्थानिक असमानता दुनिया भर के शहरी परिदृ–श्यों में झुग्गी–बस्तियों के वितरण को लगातार और गंभीर रूप से प्रभावित करती है। झुग्गी–बस्तियाँ आमतौर पर स्थानिक रूप से हाशिए पर स्थित क्षेत्रों में विकसित होती हैं। ऐसे क्षेत्र जहाँ सार्वजनिक सेवाएँ, बुनियादी ढाँचा और आधिकारिक मान्यता नहीं होती। भौगोलिक स्थिति, आर्थिक स्थिति या शासन तंत्र की परवाह किए बिना सभी सांस्कृतिक समूहों ने यह पैटर्न दिखाया, जिससे पुष्टि हुई कि स्थानिक असमानता एक सतत वैश्विक कारक

है जो अनौपचारिक बस्तियों के निर्माण में योगदान करती है। बहरहाल, सामाजिक बहिष्कार का प्रभाव, जो सामाजिक कलंक, राजनीतिक अधिकारों से वंचितता और कानूनी अदृश्यता जैसे तत्वों से चिह्नित है, क्षेत्रीय रूप से अधिक विविधातापूर्ण निकला। अध्ययन में यह भी जांच की गई कि क्या व्यक्तिवाद और सामूहिकता जैसे सांस्कृतिक लक्षणों का झुग्गी बस्तियों के वितरण पर कोई स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। **आम धारणा के विपरीत, इन सांस्कृतिक विशेषताओं और झुग्गी–बस्तियों के स्थानिक वितरण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था।** हालांकि व्यक्तिवादी समाज स्वायत्तता पर अधिक जोर दे सकते हैं और सामूहिक समाज सामुदायिक नेटवर्क को मजबूत कर सकते हैं, इन सांस्कृ–तिक अभिविन्यासों ने झुग्गी–बस्तियों के विकास में योगदान देने वाले संरचनात्मक कारकों को महत्वपूर्ण रूप से नहीं बदला। **यह शोध दर्शाता है कि भौतिक वास्तविकताएं – जैसे नीतिगत ढांचे, बुनियादी ढांचे की उपलब्धता और भूमि तक पहुंच – सांस्कृतिक मूल्यों की तुलना में शहरी असमानता पर अधिक प्रभाव डालती हैं।** इस अध्ययन से प्राप्त ज्ञान आगामी नीति और शहरी नियोजन के पहलूवों पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है। शहरों के स्थानिक असमानता को कम करने और झुग्गी–बस्तियों के विकास से उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए समान संसाधन वितरण, समावेशी शासन और संवेदनशील हस्तक्षेपों को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। **आर्थिक और सामाजिक रूप से जीवंत शहरों के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि झुग्गी–बस्तियों को विकास की विफलताओं के बजाय प्रणालीगत स्थानिक और सामाजिक गतिशीलता का परिणाम माना जाए।** यह अध्ययन शहरी बहिष्कार के वैश्विक दायरे के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाता है और ऐसी नीतियों के विकास का आधार तैयार करता है जो सांस्कृतिक विभाजनों को समाप्त करते हुए स्थानीय वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील हों।

संदर्भ

1. Reddy, C. R. (2025). *Spatial inequality and urban segregation: Socioeconomic disparities and community displacement patterns*. International Journal of Novel Research and Development, 5(1), 311. https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2501311.pdf

2. Salauddin, M., & Piracha, A. (2024). *Missing people and places: Slum and poor settlements research in South Asia*. South Asian Survey, 31(1), 85–101. https://doi.org/10.1177/09715231241264402

3. Yang, F., & Wang, C. (2025). *City shape, air pollution, and income inequality: Evidence from Chinese cities*. Applied Spatial Analysis and Policy. https://link.springer.com/article/10.1007/s12061-025-09567-3

4. Haque, A. B. M. M., Saha, S. M., & Nahiduzzaman, M. (2025). *An empirical study on multidimensional poverty: Evidence from model resilient fishing village in coastal Bangladesh*. Journal of Social and Economic Development. https://link.springer.com/article/10.1007/s40847-025-00245-9

5. Davis, M. (2007). *Planet of slums*. Verso. https://books.google.com/books/about/Planet_of_Slums.html?id=FToaDLPB2jAC

6. Sharon, T., & Matthies-Boon, V. (2025). *Vulnerability in the shadows: Institutionalised solidarity and visibility in Long Covid communities*. Social Theory & Health. https://link.springer.com/article/10.1057/s41285-025-00201-7

7. UN-Habitat. (2003). *The challenge of slums: Global report on human settlements 2003*. United Nations Human Settlements Programme. https://unhabitat.org/the-challenge-of-slums-global-report-on-human-settlements-2003